सर्वोदय सर्वविघ्नहरण
श्री भक्तामर-स्तोत्र विधान

॥ सर्व कार्य सिद्धि मन्त्र ॥

卐 ॐ ह्रीं क्रौं ह्रीं श्री ऋषभनाथाय हर हर नमः 卐

(सम्पूर्ण कार्यों की सिद्धि के लिये एक माला प्रतिदिन नियमपूर्वक करें)

आशीषानुकंपा	:	शताब्दी देशनाचार्य 108 श्री विशुद्धसागर जी मुनिराज
कृति	:	**सर्वोदय सर्वविघ्नहरण** **श्री भक्तामर महामण्डल विधान**
प्रस्तुति	:	श्रुतसंवेगी श्रमण आदित्यसागर जी मुनिराज
सम्पादन	:	श्रुतप्रिय श्रमण अप्रमितसागर जी मुनिराज
सहयोग	:	श्रमणरत्न सहजसागर जी मुनिराज
हिन्दी पद्यानुवाद	:	कु. शुभी जैन, छतरपुर
संस्करण	:	चतुर्थ 2025 - 3000 प्रतियाँ
प्रकाशक एवं	:	**समर्पण समूह, भारत**
प्राप्ति स्थान	:	97552-86521-सागर 91790-50222-भोपाल 98276-07171-जबलपुर 98260-10104-इन्दौर 94253-16840-इन्दौर 63766-49881-भीलवाड़ा (राज.)
आकल्पन एवं मुद्रण	:	गुरु आशीष ग्राफिक्स अंकित जैन शास्त्री, मड़देवरा, सागर मो. 9755286521, 8302070717
मुद्रक	:	द फाईन प्रिन्टस मो. 88788 66060

हस्त प्रक्षालन मन्त्र

ॐ ह्रीं असुजर सुजर स्वाहा

(हाथों की शुद्धि कीजिए)

अमृत स्नान मंत्र

ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय
सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय
सं हं झ्वीं क्ष्वीं ठः ठः हं सः स्वाहा।

(शरीर की शुद्धि कीजिए)

सकलीकरण मन्त्र

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः।

(अंगूठा शुद्ध करें)

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः।

(तर्जनी अंगुली शुद्ध करें)

ॐ ह्रूं णमो आयरियाणं ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः।

(मध्यमा अंगुली शुद्ध करें)

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं अनामिकाभ्यां नमः।

(अनामिका अंगुली शुद्ध करें)

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

(कनिष्ठा अंगुली शुद्ध करें)

रक्षा सूत्र बन्धन मन्त्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अस्य सर्वांगशुद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।
ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं पंचवर्णेन सूत्रेण रक्षाबन्धनं करोमि।

यज्ञोपवीत/जनेऊ धारण मंत्र

ॐ नमः परमशान्ताय शान्तिकराय
पवित्रीकरणाय अहं रत्नत्रयस्वरूपं यज्ञोपवीतं
दधामि मम गात्रं पवित्रं भवतु अर्हं नमः स्वाहा।

दिग्बन्धन मंत्र

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां पूर्व-दिशातः आगत-
विघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।
(पूर्व दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं दक्षिण-दिशातः
आगत-विघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।
(दक्षिण दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

ॐ ह्रूं णमो आयरियाणं ह्रूं पश्चिम-दिशातः
आगत-विघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।
(पश्चिम दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं उत्तर-दिशातः
आगत-विघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।
(उत्तर दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः सर्व दिशातः
आगत- विघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।
(सभी दिशाओं में पुष्प क्षेपण करें)

रक्षा मंत्र

ॐ हूं क्षूं फट् किरिटिं-किरिटिं घातय-घातय पर
विघ्नान् स्फोटय स्फोटय सहस-खण्डान् कुरु-कुरु परमुद्रां
छिन्द-छिन्द, परमन्त्रान् भिन्द भिन्द क्षः क्षः हूं फट् स्वाहा।
(स्वयं के ऊपर पुष्प क्षेपण करें)

108 कलशों से अभिषेक करने वाले महा-अतिशयकारी ऋद्धि मन्त्र

1. ॐ ह्रीं अर्हं अवधिज्ञान-बुद्धि-ऋद्धि-धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
2. ॐ ह्रीं अर्हं मनःपर्ययज्ञान-बुद्धि-ऋद्धि-धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
3. ॐ ह्रीं अर्हं केवलज्ञान-बुद्धि-ऋद्धि-धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
4. ॐ ह्रीं अर्हं बीजबुद्धि-ऋद्धि-धारक-श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय
नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
5. ॐ ह्रीं अर्हं कोष्ठबुद्धि-ऋद्धि-धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
6. ॐ ह्रीं अर्हं पदानुसारिणी बुद्धि-ऋद्धि-धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
7. ॐ ह्रीं अर्हं संभिन्न-श्रोतृत्व-बुद्धि-ऋद्धि-धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
8. ॐ ह्रीं अर्हं दूरास्वादित्व-बुद्धि-ऋद्धि-धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
9. ॐ ह्रीं अर्हं दूर-स्पर्शत्व-बुद्धि-ऋद्धि-धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
10. ॐ ह्रीं अर्हं दूर-घ्राणत्व-बुद्धि-ऋद्धि-धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
11. ॐ ह्रीं अर्हं दूर-श्रवणत्व-बुद्धि-ऋद्धि-धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
12. ॐ ह्रीं अर्हं दूर-दर्शित्व-बुद्धि-ऋद्धि-धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।

108 कलशों से अभिषेक करने वाले महा-अतिशयकारी ऋद्धि मन्त्र

13. ॐ ह्रीं अर्हं दश-पूर्वित्व-बुद्धि-ऋद्धि-धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
14. ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्दश-पूर्वित्व-बुद्धि-ऋद्धि-धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
15. ॐ ह्रीं अर्हं अष्टांग-महानिमित्त-बुद्धि-ऋद्धि-धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
16. ॐ ह्रीं अर्हं प्रज्ञाश्रमणत्व-बुद्धि-ऋद्धि-धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
17. ॐ ह्रीं अर्हं प्रत्येक-बुद्धि-ऋद्धि-धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
18. ॐ ह्रीं अर्हं वादित्व-बुद्धि-ऋद्धि-धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
19. ॐ ह्रीं अर्हं नभस्तल-गामित्व-चारण-ऋद्धि-धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
20. ॐ ह्रीं अर्हं जल-चारण-ऋद्धि-धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
21. ॐ ह्रीं अर्हं जंघा-चारण-ऋद्धि-धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
22. ॐ ह्रीं अर्हं फल-पुष्प-पत्र-चारण-ऋद्धि-धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
23. ॐ ह्रीं अर्हं अग्निधूम-चारण-ऋद्धि-धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
24. ॐ ह्रीं अर्हं मेघधारा-चारण-ऋद्धि-धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।

108 कलशों से अभिषेक करने वाले महा-अतिशयकारी ऋद्धि मन्त्र

25. ॐ ह्रीं अर्हं तंतु-चारण-ऋद्धि-धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
26. ॐ ह्रीं अर्हं ज्योतिश्-चारण-ऋद्धि-धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
27. ॐ ह्रीं अर्हं मरुच्-चारण-ऋद्धि-धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
28. ॐ ह्रीं अर्हं अणिमा-विक्रिया-ऋद्धि-धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
29. ॐ ह्रीं अर्हं महिमा-विक्रिया-ऋद्धि-धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
30. ॐ ह्रीं अर्हं लघिमा-विक्रिया-ऋद्धि-धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
31. ॐ ह्रीं अर्हं गरिमा-विक्रिया-ऋद्धि-धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
32. ॐ ह्रीं अर्हं प्राप्ति-विक्रिया-ऋद्धि-धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
33. ॐ ह्रीं अर्हं प्राकाम्य-विक्रिया-ऋद्धि-धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
34. ॐ ह्रीं अर्हं ईशत्व-विक्रिया-ऋद्धि-धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
35. ॐ ह्रीं अर्हं वशित्व-विक्रिया-ऋद्धि-धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
36. ॐ ह्रीं अर्हं अप्रतिघात-विक्रिया-ऋद्धि-धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।

108 कलशों से अभिषेक करने वाले महा-अतिशयकारी ऋद्धि मन्त्र

37. ॐ ह्रीं अर्हं अंतर्ध्यान–विक्रिया-ऋद्धि–धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।

38. ॐ ह्रीं अर्हं कामरूप–विक्रिया –ऋद्धि–धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।

39. ॐ ह्रीं अर्हं उग्रतपः ऋद्धि–धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।

40. ॐ ह्रीं अर्हं दीप्ततपः ऋद्धि–धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।

41. ॐ ह्रीं अर्हं तप्ततपः ऋद्धि–धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।

42. ॐ ह्रीं अर्हं महातपः ऋद्धि–धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।

43. ॐ ह्रीं अर्हं घोरतपः–ऋद्धि–धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।

44. ॐ ह्रीं अर्हं घोर पराक्रम तपः ऋद्धि–धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।

45. ॐ ह्रीं अर्हं अघोर–ब्रह्मचारित्व तपः ऋद्धि–धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।

46. ॐ ह्रीं अर्हं मनोबल ऋद्धि–धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।

47. ॐ ह्रीं अर्हं वचनबल–ऋद्धि–धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।

48. ॐ ह्रीं अर्हं कायबल–ऋद्धि–धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।

108 कलशों से अभिषेक करने वाले महा-अतिशयकारी ऋद्धि मन्त्र

49. ॐ ह्रीं अर्हं आमर्ष-औषधि-ऋद्धि-धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
50. ॐ ह्रीं अर्हं खेल-औषधि-ऋद्धि-धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
51. ॐ ह्रीं अर्हं जल्ल-औषधि-ऋद्धि-धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
52. ॐ ह्रीं अर्हं मल-औषधि-ऋद्धि-धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
53. ॐ ह्रीं अर्हं बिड-औषधि-ऋद्धि-धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
54. ॐ ह्रीं अर्हं सर्व-औषधि-ऋद्धि-धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
55. ॐ ह्रीं अर्हं मुख-निर्विष-ऋद्धि-धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
56. ॐ ह्रीं अर्हं दृष्टि-निर्विष-ऋद्धि-धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
57. ॐ ह्रीं अर्हं आशीर्-विष-ऋद्धि-धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
58. ॐ ह्रीं अर्हं दृष्टि-विष-ऋद्धि-धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
59. ॐ ह्रीं अर्हं क्षीर-स्रावि-रस-ऋद्धि-धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
60. ॐ ह्रीं अर्हं मधुर-स्रावि-रस-ऋद्धि-धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।

108 कलशों से अभिषेक करने वाले महा-अतिशयकारी ऋद्धि मन्त्र

61. ॐ ह्रीं अर्हं अमृत-स्रावि-रस-ऋद्धि-धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
62. ॐ ह्रीं अर्हं सर्पिस्-स्रावि-रस-ऋद्धि-धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
63. ॐ ह्रीं अर्हं अक्षीण-महानस-ऋद्धि-धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
64. ॐ ह्रीं अर्हं अक्षीण-महालय-ऋद्धि-धारक
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
65. ॐ ह्रीं अर्हं क्षुधा-दोष-रहित
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
66. ॐ ह्रीं अर्हं तृषा-दोष-रहित
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
67. ॐ ह्रीं अर्हं जरा-दोष-रहित
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
68. ॐ ह्रीं अर्हं आतंक-दोष-रहित
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
69. ॐ ह्रीं अर्हं जन्म-दोष-रहित
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
70. ॐ ह्रीं अर्हं मरण-दोष-रहित
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
71. ॐ ह्रीं अर्हं भय-दोष-रहित
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
72. ॐ ह्रीं अर्हं मद-दोष-रहित
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।

108 कलशों से अभिषेक करने वाले महा-अतिशयकारी ऋद्धि मन्त्र

73. ॐ ह्रीं अर्हं राग-दोष-रहित
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
74. ॐ ह्रीं अर्हं द्वेष-दोष-रहित
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
75. ॐ ह्रीं अर्हं मोह-दोष-रहित
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
76. ॐ ह्रीं अर्हं चिंता-दोष-रहित
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
77. ॐ ह्रीं अर्हं रति-दोष-रहित
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
78. ॐ ह्रीं अर्हं निद्रा-दोष-रहित
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
79. ॐ ह्रीं अर्हं आश्चर्य-दोष-रहित
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
80. ॐ ह्रीं अर्हं शोक-दोष-रहित
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
81. ॐ ह्रीं अर्हं स्वेद-दोष-रहित
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
82. ॐ ह्रीं अर्हं खेद-दोष-रहित
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
83. ॐ ह्रीं अर्हं शत-योजनपर्यंत-सुभिक्षता-गुण-विभूषित-
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।
84. ॐ ह्रीं अर्हं आकाश-गमनत्व-गुण-विभूषित-
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।

108 कलशों से अभिषेक करने वाले महा-अतिशयकारी ऋद्धि मन्त्र

85. ॐ ह्रीं अर्हं प्राणिघात-रहितत्व-गुण-विभूषित-
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।

86. ॐ ह्रीं अर्हं निराहारत्व-गुण-विभूषित-
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।

87. ॐ ह्रीं अर्हं उपसर्ग-अभावत्व-गुण-विभूषित-
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।

88. ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्दिश-मुखत्व-गुण-विभूषित-
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।

89. ॐ ह्रीं अर्हं छाया-रहितत्व-गुण-विभूषित-
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।

90. ॐ ह्रीं अर्हं निर्निमेष-गुण-विभूषित-
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।

91. ॐ ह्रीं अर्हं विद्या-ईशत्व-गुण-विभूषित-
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।

92. ॐ ह्रीं अर्हं नखकेश-वृद्धि-रहितत्व-गुण-विभूषित-
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।

93. ॐ ह्रीं अर्हं क्षायिक-सम्यक्त्व-गुण-विभूषित-
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।

94. ॐ ह्रीं अर्हं अनंत-ज्ञान-गुण-विभूषित-
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।

95. ॐ ह्रीं अर्हं अनंत-दर्शन-गुण-विभूषित-
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।

96. ॐ ह्रीं अर्हं अनंतवीर्य-गुण-विभूषित-
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।

108 कलशों से अभिषेक करने वाले महा-अतिशयकारी ऋद्धि मन्त्र

97. ॐ ह्रीं अर्हं अव्याबाधत्व-गुण-विभूषित-
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।

98. ॐ ह्रीं अर्हं अवगाहनत्व-गुण-विभूषित-
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।

99. ॐ ह्रीं अर्हं सूक्ष्मत्व-गुण-विभूषित-
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।

100. ॐ ह्रीं अर्हं अगुरुलघुत्व-गुण-विभूषित-
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।

101. ॐ ह्रीं अर्हं अशोक वृक्ष-प्रातिहार्य-विभूषित-
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।

102. ॐ ह्रीं अर्हं सुर पुष्पवृष्टि-प्रातिहार्य-विभूषित-
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।

103. ॐ ह्रीं अर्हं दिव्य ध्वनि-प्रातिहार्य-विभूषित-
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।

104. ॐ ह्रीं अर्हं चतुःषष्टि-चामर-प्रातिहार्य-विभूषित-
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।

105. ॐ ह्रीं अर्हं सिंहासन-प्रातिहार्य-विभूषित-
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।

106. ॐ ह्रीं अर्हं भामण्डल-प्रातिहार्य-विभूषित-
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।

107. ॐ ह्रीं अर्हं देव-दुन्दुभि-प्रातिहार्य-विभूषित-
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।

108. ॐ ह्रीं अर्हं छत्रत्रय-प्रातिहार्य-विभूषित-
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलेन स्नपयामीति स्वाहा।

(इति जलेन अभिषेकं करोमि)

समुच्चय अर्घ

अष्टम वसुधा पाने को, कर में ये आठों द्रव्य लिये,
सहज शुद्ध स्वाभाविकता से, निज में निजगुण प्रकट किये।
यह अर्घ्य समर्पण करके में, श्री देव-शास्त्र-गुरु को ध्याऊँ,
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ ॥1॥

ऊँ ह्रीं अर्हं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो विद्यमान-विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनन्तानन्त-सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो अनर्घपद प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्तमान चौबीसी समुच्चय अर्घ

जल फल आठों शुचिसार, ताकों अर्घ करों,
तुमको अरपों भवतार, भव तरि मोक्ष वरों।
चौबीसों श्री जिनचन्द, आनंद कन्द सही,
पद जजत हरत भवफन्द, पावत मोक्ष मही ॥2॥

ऊँ ह्रीं अर्हं श्री वृषभादि-वीरांतेभ्यो अनर्घपद प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री भक्तामर विधान प्रारंभ

मंगल गीत

(छन्द - ज्ञानोदय...)

तीन लोक के शिखर स्वरूपी, हे प्रभु परमेशा,
आदि ब्रह्मा आदि प्रभु के, चरनन को छूता ।
प्रथम तीर्थंकर कलयुग के हैं, आदीश्वर स्वामी,
शुद्ध भाव कर वंदन करता, त्रिभुवन के स्वामी ।।1।।

भक्तामर की महिमा गायी, आदीश्वर प्रभु की,
संस्तुति है सिरि मानतुंग की, अद्‌भुत अमर कृति ।
संस्तुति पढ़कर भविक जनों ने, प्रभु यशगान किया,
शुद्ध कंठ से गाकर अपना, भाव विशुद्ध किया ।।2।।

राजा ने बेड़ी से जकड़ा, जब सिरि मुनिवर को,
किया संस्तवन आदि प्रभु का, पाप विखण्डन को ।
कलिकाल में हुआ था अतिशय, अति आश्चर्यकारी,
खुली बेड़ियाँ जिन भक्ति से , मुनिवर की सारी ।।3।।

क्षमा याचना करके नृप ने, पाप स्वीकार किया,
क्षमादान देकर मुनिवर ने, आशीर्वाद दिया ।
श्रद्धा भक्ति से हे भविजन ! भक्तामर गाओ,
सकल कार्य की सिद्धि हेतु, भक्ति उर लाओ ।।4।।

।। इति पुष्पांजलिं क्षिपामि ।।

श्री भक्तामर विधान पूजा

(श्लोक)

परमज्ञान-सम्पन्नं, घातिकर्म-प्रघातिनम् ।
वंदेऽहं प्रथमं तीर्थं, महाधर्म-प्रकाशकम् ॥1॥

भक्तामर-महास्त्रोतं, मंत्रपूजां, करोम्यहम् ।
सर्वजीव-हितागारं, पुरुदेवं नमाम्यहम् ॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वकार्य-सिद्धि-प्रदायक श्री वृषभनाथ तीर्थेश !
मम हृदये अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं अर्हं सर्वकार्य-सिद्धि-प्रदायक श्री वृषभनाथ तीर्थेश !
मम हृदये अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं अर्हं सर्वकार्य-सिद्धि-प्रदायक श्री वृषभनाथ तीर्थेश !
मम हृदय-समीपे सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

॥ परिपुष्पांजलिं क्षिपामि ॥

॥ अथ अष्ट द्रव्यार्चनम् ॥

(लय-उदक चंदन तंदुल...)

॥ जल ॥

सुर – सुरीनद – संभृत – जीवनैः,
सकलताप – हरैः सुखकारणैः
सुखकरं भव – पाप – विनाशकं,
वृषभनाथ – जिनेश – महं यजे ॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं सकलसिद्धि-शांतिविधायकाय हृदय-स्थिताय श्री वृषभजिन-चरणाय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

॥ चंदन ॥

मलय – चंदन – मिश्रित – कुंकुमैः,
सुरभितागत – षट् पद – वंदनैः ।
सुखकरं भव – पाप – विनाशकं,
वृषभनाथ – जिनेश – महं यजे ॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं सकलसिद्धि-शांति-विधायकाय हृदय-स्थिताय श्री वृषभजिन-चरणाय संसार ताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ अक्षत ॥

कमल – जाति – समुद्भव – तंदुलैः,
परम – पावन – पंच – सु – पुंजकैः ।
सुखकरं भव – पाप – विनाशकं,
वृषभनाथ – जिनेश – महं यजे ॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं सकलसिद्धि-शांति विधायकाय हृदय-स्थिताय श्री वृषभजिन-चरणाय-अक्षय-पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

॥ पुष्प ॥

जलज – चंपक – जाति–सुमालती–,
वकुल–पाडल–कुन्द–सु–पुष्पकैः ।
सुखकरं भव – पाप – विनाशकं,
वृषभनाथ – जिनेश – महं यजे ॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं सकलसिद्धि-शांतिविधायकाय हृदय-स्थिताय श्री वृषभजिन-चरणाय कामबाण-विनाशनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

॥ नैवेद्य ॥

वटक–खज्जक–मंडक–पायसैः,
विविध–मोदक–व्यंजक–संयुतैः ।
सुखकरं भव – पाप – विनाशकं,
वृषभनाथ–जिनेश–महं यजे ॥ 5 ॥

ॐ ह्रीं अर्हं सकलसिद्धि-शांतिविधायकाय हृदय-स्थिताय श्री वृषभजिन-चरणाय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ दीप ॥

रविकरेव सु – सुंदर – दीपकैः,
प्रबल – मोह – घनाघ – निवारकैः।
सुखकरं भव – पाप – विनाशकं,
वृषभनाथ – जिनेश – महं यजे ॥ 6 ॥

ॐ ह्रीं अर्हं सकलसिद्धि-शांतिविधायकाय हृदय-स्थिताय श्री वृषभजिन-चरणाय केवलज्ञान प्राप्ताय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ धूप ॥

अगुरु – धूप – भरैः घट – विष्टतैः,
प्रतिदिशं मिलितालि – समूहकैः ।
सुखकरं भव – पाप – विनाशकं,
वृषभनाथ–जिनेश–महं यजे ॥ 7 ॥

ॐ ह्रीं अर्हं सकलसिद्धि-शांतिविधायकाय हृदयस्थिताय
श्री वृषभजिन-चरणाय अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ फल ॥

सकल–लिंबुक–लांगलि–दाडिमैः,
कदलि–पूंग–कपिच्छ–शुभैः फलैः ।
सुखकरं भव – पाप – विनाशकं,
वृषभनाथ – जिनेश – महं यजे ॥ 8 ॥

ॐ ह्रीं अर्हं सकलसिद्धि-शांतिविधायकाय हृदय-स्थिताय
श्री वृषभजिन-चरणाय महामोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ अर्घ ॥

जल – सुगंध – शुभाक्षत – पुष्पकैः,
चरु – सुदीप – सुधूप – फलार्घ्यकैः।
जिनपतिं च यजे सुखकारकं,
वदति मेरु – सुचन्द्र – यतीश्वरम् ॥ 9

ॐ ह्रीं अर्हं सकलसिद्धि-शांतिविधायकाय हृदय-स्थिताय
श्री वृषभजिन-चरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोपद्रव - विनाशक

भक्तामर प्रणत – मौलि – मणि – प्रभाणा,
मुद्योतकं दलित – पाप – तमो – वितानम् ।
सम्यक्-प्रणम्य जिन – पाद – युगं युगादा,
वालम्बनं भवजले पततां जनानाम् ॥1॥

(हिन्दी पद्यानुवाद)

देवों को नमता मुकुटों को,
मणियों की आभाओं को,
विस्तृत पाप रूप तम हरने,
तुम्हीं प्रकाशित करते हो ।
युग के आदि कर्मभूमि में,
आदि प्रभु चरणों को नमन,
डूबे हम भव के सागर में,
तुम्हीं सहायक तुम्हें नमन ॥1॥

अर्घ्य : ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ श्रीं क्लीं ब्लूं क्रौं ॐ ह्रीं विश्व-विघ्नहराय श्री वृषभजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मंत्र : ॐ ह्रीं अर्हं णमो अरिहंताणं णमो जिणाणं ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः असिआउसा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं स्वाहा।
ऋद्धि : ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।
दीप : ॐ ह्रीं अर्हं अवधिज्ञान-बुद्धि-ऋद्धि-प्राप्ताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः दीप-प्रज्वलनं करोमि ॥1॥

सर्वविघ्न विनाशक

यः संस्तुतः सकल-वाङ्मय- तत्त्व-बोधा-,
दुद्भूत - बुद्धि - पटुभिः सुरलोक - नाथैः ।
स्तोत्रैर्-जगत्-त्रितय-चित्त-हरै-रुदारैः,
स्तोष्ये किलाह-मपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥2॥

(हिन्दी पद्यानुवाद)

परम तत्त्व के पूर्ण विजेता,
ऋषभ प्रभु स्वीकारो नमन,
कुशल चेतना वाले स्वामी,
अमरों द्वारा भी वंदन ।
मन को हरने वाले प्रभु जी,
तुम पूजित त्रयलोकों से,
आद्य प्रभुवर आदिनाथ जी,
नमन तुम्हें हो निश्चय से ॥2॥

अर्घ्य - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सकलार्थ-सिद्धिकराय सकल-रोगहराय श्री वृषभजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मंत्र - ॐ ह्रीं श्रीं रं रं क्रौं क्रौं श्रीं नमः स्वाहा ।

ऋद्धि - ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहि-जिणाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।

दीप - ॐ ह्रीं अर्हं मनःपर्यय-ज्ञान-बुद्धि-ऋद्धि-प्राप्ताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः दीप-प्रज्वलनं करोमि ।

शत्रु दृष्टि बंधक

बुद्ध्या विनाऽपि विबुधार्चित – पाद – पीठ –
स्तोतुं समुद्यत – मतिर् – विगत – त्रपोऽहम्।
बालं विहाय जल – संस्थित – मिन्दु – बिम्ब–
मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम् ॥3॥

(हिन्दी पद्यानुवाद)

बुद्धि नहीं है मुझ में भगवन,
देवों द्वारा तुम अर्चित,
चरण कमल की भक्ति करन को,
भगवन मैं हूँ निर्लज्जित।
जल में रहते चन्द्र बिम्ब को,
कौन पकड़ना चाहेगा,
एक मात्र मानुज बालक ही,
ऐसा करना चाहेगा ॥3॥

अर्घ्य **- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सिद्धेभ्यो बुद्धेभ्यः सर्वसिद्धि-दायकेभ्यः श्री वृषभजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**
मंत्र **- ॐ नमो भगवते परमतत्त्वार्थ-भावकार्य-सिद्धिः ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रः नमः स्वाहा।**
ऋद्धि **- ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहि-जिणाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।**
दीप **- ॐ ह्रीं अर्हं केवलज्ञान-बुद्धि-ऋद्धि-प्राप्ताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः दीप-प्रज्वलनं करोमि।**

जलजन्तु अभय दायक

वक्तुं गुणान्-गुण-समुद्र ! शशांक-कान्तान्,
कस्ते क्षमः सुरगुरु - प्रतिमोऽपि बुद्ध्या।
कल्पान्त - काल - पवनोद्धत - नक्र - चक्रं,
को वा तरीतु-मल-मम्बुनिधिं भुजाभ्याम् ।।4।।

(हिन्दी पद्यानुवाद)

कला विभूषित हिमकर जैसी,
उज्जवल विद्या को कहने को,
देवों के गुरुओं के जैसा,
कौन बुद्धि से सक्षम हो।
प्रलय काल की तीव्र पवन से,
मगर युक्त सागर को कौन ?
अपनी बाँहों से उतराना,
सत्ता युक्त दिखेगा कौन ? ।।4।।

अर्घ्य **- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नाना-दुःख समुद्र-तारणाय जलयात्रा-सिद्धिकराय श्री वृषभजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**
मंत्र **- ॐ ह्रीं क्लीं ग्लौं सौं सौं नमः स्वाहा।**
ऋद्धि **- ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहि-जिणाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।**
दीप **- ॐ ह्रीं अर्हं बीज-बुद्धि-ऋद्धि-प्राप्ताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः दीप प्रज्वलनं करोमि ।**

नेत्रपीड़ा-निवारक

सोऽहं तथापि तव भक्ति – वशान् – मुनीश !
कर्तुं स्तवं विगत – शक्ति – रपि प्रवृत्तः ।
प्रीत्यात्म – वीर्य – मविचार्य मृगी मृगेन्द्रं,
नाभ्येति किं निजशिशोः परिपाल–नार्थम् ॥5॥

(हिन्दी पद्यानुवाद)

हे मुनियो के ईश्वर ! मैं भी,
संस्तुति के अधिकार हुआ,
शक्ति नहीं पर भक्ति के वश,
संस्तुति को तैयार हुआ ।
हिरण शक्ति को बिना विचारे,
प्रीति वश सिंह के अभिमुख,
अपने शिशु के रक्षण हेतु,
विस्मृत करके आतम दुःख ॥5॥

अर्घ्य - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं क्रौं सर्वसंकटनिवारणेभ्यः सुपार्श्व-सहायकेभ्यः श्री वृषभजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मंत्र - ॐ ह्रीं क्रौं झ्रीं ग्लौं ब्लूं नमः स्वाहा ।

ऋद्धि - ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहि-जिणाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।

दीप - ॐ ह्रीं अर्हं कोष्ठ-बुद्धि-ऋद्धि-प्राप्ताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः दीप प्रज्वलनं करोमि ।

बुद्धिज्ञान प्रदायक

अल्पश्रुतं श्रुत – वतां परि – हास – धाम,
त्वद् – भक्ति – रेव मुखरी कुरुते बलान् माम्।
यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति,
तच्चाम्र–चारु–कलिका–निक–रैक–हेतुः ॥6॥

(हिन्दी पद्यानुवाद)

विद्वानों का हसी पात्र मैं,
अल्प वेद का ज्ञाता हूँ,
तेरी सद्भक्ति के बल ही,
मैं भी प्रेरित होता हूँ।
कोयल मधुर बोलती जब-जब,
शरद ऋतु में निश्चय जो,
उसमें सुंदर आम मंजरी,
एक मात्र ही कारण हो ॥6॥

अर्घ्य - ॐ ह्रीं श्रं श्रुं ब्लूं ह्रौं याचितार्थ-प्रतिपादन-शक्ति-सहिताय श्री वृषभजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र - ॐ ह्रीं श्रां श्रीं श्रूं श्रः हं सं थः थः थः ठः ठः सरस्वती भगवती विद्याप्रसादं कुरु कुरु स्वाहा।

ऋद्धि - ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठ-बुद्धीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

दीप - ॐ ह्रीं अर्हं पदानुसारि बुद्धि-ऋद्धि-प्राप्ताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः दीप प्रज्वलनं करोमि।

सर्वपाप नाशक

त्वत् - संस्तवेन भव - सन्तति सन्निबद्धं,
पापं क्षणात् क्षय - मुपैति शरीर - भाजाम् ।
आक्रान्त-लोक-मलि-नील-मशेष-माशु,
सूर्यांशु-भिन्न-मिव शार्वर मन्ध-कारम् ॥7॥

(हिन्दी पद्यानुवाद)

हे प्रभु ! तेरी संस्तुति से ही,
भव बंधन में फँसे हुये,
क्षण भर में ही क्षय हो जाये,
पाप कर्म सब बँधे हुये ।
फैले सर्व लोक में काला,
भौंरों के सम अंधियारा,
अतिशय भीषण सूर्य किरण से,
प्रकट हुआ जो उजियारा ॥7॥

अर्घ्य - ऊँ ह्रीं क्लीं सं जं सं सकल-पाप-फल-कष्ट निवारणाय श्री वृषभजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र - ऊँ ह्रीं हं सं श्रां श्रीं क्रौं क्लीं सर्वदुरित-संकट-क्षुद्रोपद्रव-कष्ट निवारणं कुरु कुरु स्वाहा।

ऋद्धि - ऊँ ह्रीं अर्हं णमो बीज-बुद्धीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

दीप - ऊँ ह्रीं अर्हं संभिन्न-श्रोतृत्व बुद्धि-ऋद्धि-प्राप्ताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः दीप प्रज्वलनं करोमि।

सर्वारिष्ट संहारक

मत्वेति नाथ ! तव संस्तवनं मयेद -,
मारभ्यते तनु - धियाऽपि तव प्रभावात् ।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनी - दलेषु,
मुक्ता-फल-द्युति-मुपैति ननूद-बिन्दुः ॥4॥

(हिन्दी पद्यानुवाद)

समझ-समझ कर ऐसा स्वामी,
अल्पज्ञान धारक मुझसे,
भक्ति संस्तुति मंगल कारी,
शुभ आरंभ विनय मन से।
आप प्रताप से ही यह भक्ति,
चित्त हरण में कारण है,
नलिनी पत्रों में जो मोती,
जल बूँदे ही कारण हैं ॥4॥

अर्घ्य - ॐ ह्रीं यं यं ठः ठः अनेकसंकट-संसार-दुःख-निवारणाय श्री वृषभजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र - ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः असिआउसा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

ऋद्धि - ॐ ह्रीं अर्हं णमो पादाणुसारिणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

दीप - ॐ ह्रीं अर्हं दशपूर्वित्व-बुद्धि-ऋद्धि-प्राप्ताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः दीप प्रज्वलनं करोमि।

चोर भय निवारक

आस्तां तव स्तवन – मस्त – समस्त – दोषं,
त्वत् संकथाऽपि जगतां दुरितानि हन्ति ।
दूरे सहस्र – किरणः कुरुते प्रभैव,
पद्मा – करेषु जलजानि विकास – भाञ्जि ॥9॥

(हिन्दी पद्यानुवाद)

सारे दोष रहित तुम प्रभुजी,
थुति आपकी महान है,
मात्र आपकी कथा जनों के,
कष्ट हरण में कारण है।
सूर्य किरण की प्रभा दूर से,
सरोवरों के कमलों को,
विकसित ऐसे कर देती है,
छटा आपकी निर्मल जो ॥9॥

अर्घ्य - ऊँ ह्रीं श्रीं क्रौं इवीं रः रः हं हः मनोवांछित-फल-दायकाय श्री वृषभजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र - ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रूं फट् नमो भगवते जय-विजय कराय ह्रौं ह्रः नमः स्वाहा।

ऋद्धि - ऊँ ह्रीं अर्हं णमो संभिण्ण-सोदारणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

दीप - ऊँ ह्रीं अर्हं चतुर्दश-पूर्वित्व-बुद्धि-ऋद्धि-प्राप्ताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः दीप प्रज्वलनं करोमि।

उन्मत्त श्वान विष विनाशक

नात्यद् – भुतं भुवन – भूषण ! भूतनाथ !
भूतैर् – गुणैर् – भुवि भवन्त – मभिष्टुवन्तः ।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा,
भूत्याश्रितं य इह नात्म – समं करोति ॥10॥

(हिन्दी पद्यानुवाद)

हे त्रिभुवन आभूषण प्रभुवर !
जगन्नाथ हो अचरज क्या ?
आप भक्ति में लीन पुरुष भी,
आप तुल्य हो अचरज क्या ?
विस्मय नहीं कोई भी इसमें,
उस नृप से उपलब्धि क्या ?
अपने आश्रित जन मानव को,
अपने सम नहि करता क्या ? ॥10॥

अर्घ्य - ॐ ह्रीं अर्हं ह्रां ह्रौं शत्रुता-विनाशनाय सर्व-पराजय-उपसर्गहराय श्री वृषभजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र - ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः श्रां श्रीं श्रूं श्रः सिद्ध-बुद्ध-कृतार्थो भव भव वषट् संपूर्ण स्वाहा।

ऋद्धि - ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयंबुद्धाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

दीप - ॐ ह्रीं अर्हं अष्टांग महानिमित्ति बुद्धि-ऋद्धि-प्राप्ताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः दीप प्रज्वलनं करोमि।

इष्टजन आमन्त्रक

दृष्ट्वा भवन्त – मनिमेष – विलोक – नीयं,
नान्यत्र तोष – मुपयाति जनस्य चक्षुः ।
पीत्वा पयः शशिकर – द्युति–दुग्ध–सिन्धोः,
क्षारं जलं जलनिधे–रसितुं क–इच्छेत् ॥11॥

(हिन्दी पद्यानुवाद)

देख तुम्हारी दिव्य छटा जो,
निरनिमेष से दर्शन योग्य,
मानुष की आँखों को मिलता,
और नहीं संतोष प्रयोग।
चन्द्र किरण सम कांति वाले,
क्षीरोदधि सलिल का पान,
लवण सिंधु के खारे जल का,
प्राणी कौन करेगा पान ? ॥11॥

अर्घ्य - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्रां श्रीं कुमति निवारिण्यै महामायायै सकल-तुष्टि-पुष्टिकराय श्री वृषभजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मंत्र - ॐ णमो भगवते प्रसिद्धरूपाय भक्तियुक्ताय सां सीं सौं ह्रां ह्रीं ह्रौं क्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।
ऋद्धि - ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेय-बुद्धाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।
दीप - ॐ ह्रीं अर्हं प्रज्ञाश्रमण-बुद्धि-ऋद्धि-प्राप्ताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः दीप प्रज्वलनं करोमि।

हाथीमद निवारक

यैः शांत-राग-रुचिभिः परमाणु-भिस्त्वं,
निर्मापितस् - त्रिभुवनैक - ललामभूत ।
तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्याम्,
यत्ते समान - मपरं न हि रूप - मस्ति ॥12॥

(हिन्दी पद्यानुवाद)

जिन शांति भावों के धारक,
कांति वाले परमाणु हैं,
त्रिभुवन निर्मित एक मात्र ही,
सुंदर रूप तुम्हारा है।
निश्चय से उतने ही थे,
परमाणु स्थित वसुधा पर,
तेरे सम ना ही है दूजा,
रूप मिलेगा परमेश्वर ॥12॥

अर्घ्य **- ॐ श्रीं क्लीं झ्रौं झ्रौं रं ह्रीं अतुलबल पराक्रमाय श्री वृषभजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**
मंत्र **- ॐ आं आं अं अः सर्वराजा प्रजामोहिनी सर्वजनवश्यं कुरु कुरु स्वाहा।**
ऋद्धि **- ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहि-बुद्धाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।**
दीप **- ॐ ह्रीं अर्हं प्रत्येक-बुद्धि-ऋद्धि-प्राप्ताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः दीप प्रज्वलनं करोमि।**

विविध भय निवारक

वक्त्रं क्व ते सुर – नरो – रग – नेत्र – हारि,
निःशेष – निर्जित – जगत् त्रितयोप–मानम् ।
बिम्बं कलंक – मलिनं क्व निशा – करस्य,
यद् – वासरे भवति पाण्डु – पलाश – कल्पम् ॥13॥

(हिन्दी पद्यानुवाद)

विषधर, देव, मनुष्य नयन को,
हरने वाला मुख तेरा,
पूर्ण रूप से जीत लिया है,
त्रय जग उपमा को ऐसा ।
कहाँ बिंब है निशापति का,
मलिन युक्त दोषों से विभो !
जो कि दिन में पीले फीके,
रक्त पुष्प के समान हो ॥13॥

अर्घ्य **- ऊँ ह्रीं रं श्रीं क्रौं भूतप्रेतादि भय निवारणाय श्री वृषभजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा**

मंत्र **- ऊँ ह्रीं श्रीं हं सः ह्रौं ह्रां ह्रीं द्रां द्रीं द्रौं द्रः मोहिनी सर्वजनवश्यं कुरु कुरु स्वाहा।**

ऋद्धि **- ऊँ ह्रीं अर्हं णमो उजु-मदीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।**

दीप **- ऊँ ह्रीं अर्हं वादित्वादि-बुद्धि-ऋद्धि-प्राप्ताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः दीप प्रज्वलनं करोमि।**

लक्ष्मीदायक/वातरोग निवारक

सम्पूर्ण – मण्डल – शशांक कला – कलाप,
शुभ्रा गुणास् – त्रिभुवनं तव लंघयन्ति ।
ये संश्रितास् – त्रिजगदीश्वर नाथमेकं,
कस्तान् निवारयति संचरतो यथेष्टम् ॥14॥

(हिन्दी पद्यानुवाद)

कला यूथ के समान उज्जवल
पूर्ण मासि के सुधा सदन,
तीन लोक को लाँघ रहे हैं,
नमते श्रेष्ठ गुणों को हम।
एक मात्र ही नाथ आपका,
आश्रय लिया जगत्त्रय ईश,
स्वेच्छा से विचरण करने को,
कौन रोक सकता है शीश ॥14॥

अर्घ्य - **ॐ ह्रीं भा ना क्रौं ह्रीं लक्ष्मी-सुख-विधायकाय सौभाग्य-रूपाय श्री वृषभजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा**

मंत्र - **ॐ नमो भगवती गुणवती महामानसी स्वाहा।**

ऋद्धि - **ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउल-मदीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।**

दीप - **ॐ ह्रीं अर्हं नभस्तल-गामित्व-चारण-ऋद्धि-प्राप्ताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः दीप प्रज्वलनं करोमि।**

राज्य वैभव प्रदायक

चित्रं कि – मत्र यदि ते त्रिदशांग – नाभिर्,
नीतं मना – गपि मनो न – विकार – मार्गम् ।
कल्पान्त – काल – मरुता चलिता – चलेन,
किं मन्द–राद्रि–शिखरं चलितं कदाचित् ॥15॥

(हिन्दी पद्यानुवाद)

मंजुल देवरामाओं द्वारा,
मोह युक्त नहीं हुये प्रभु,
काम भाव न मन में आता,
नहीं अचंभा कदा विभु !
प्रलयकाल की मारुत से क्या,
मेरु को विचलित देखा ?
कभी हुआ चंचल पर्वत क्या ?
मैंने कभी नहीं देखा ॥15॥

***अर्घ्य* - ऊँ ह्रां ह्रीं क्रौं श्रीं नमो अचिन्त्यबल पराक्रमाय सर्वार्थ-कामरूपाय श्री वृषभजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

***मंत्र* - ऊँ नमो भगवती गुणवती सुसीमा पृथ्वी वज्र श्रृंखला मानसी महामानसी स्वाहा।**

***ऋद्धि* - ऊँ ह्रीं अर्हं णमो दसपुव्वीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।**

***दीप* - ऊँ ह्रीं अर्हं जल-चारण-ऋद्धि-प्राप्ताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः दीप प्रज्वलनं करोमि।**

प्रतिद्वन्दी प्रताप अवरोधक

निर्धूम - वर्ति - रप - वर्जित - तैल - पूरः,
कृत्स्नं जगत् - त्रय - मिदं प्रकटी - करोषि ।
गम्यो न जातु मरुतां चलिता - चलानां,
दीपोऽपरस्- त्वमसि नाथ! जगत्-प्रकाशः ॥16॥

(हिन्दी पद्यानुवाद)

धूम और बाती से ही नित,
तैल पूर से वंचित हो,
फिर भी पूरे इस त्रय जग को,
आप प्रकाशित करते हो ।
शेखर विचलित करने वाली,
पवन तनिक भी गम्य नहीं,
अत: प्रकाशित अद्भुत दीपक,
तीन लोक में और नहीं ॥16॥

अर्घ्य - ऊँ ह्रीं ग्लौं अनंतबलप्रदाय त्रैलोक्य-वशंकराय श्री वृषभजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र - ऊँ नमः सुमंगला-सुसीमा-नाम-देवी-सर्व-समीहिताय वज्र शृंखलां कुरु कुरु स्वाहा।

ऋद्धि - ऊँ ह्रीं अर्हं णमो चउदस-पुव्वीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

दीप - ऊँ ह्रीं अर्हं जंघा-चारण-ऋद्धि-प्राप्ताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः दीप प्रज्वलनं करोमि।

उदर व्याधि नाशक

नास्तं कदाचि - दुपयासि न राहु - गम्यः,
स्पष्टी - करोषि सहसा युगपज् - जगन्ति ।
नाम्भो - धरो - दर - निरुद्ध - महा - प्रभावः,
सूर्याति-शायि-महिमासि मुनीन्द्र ! लोके ॥17॥

(हिन्दी पद्यानुवाद)

अस्त कभी न होने वाले,
न ही राहू के उपगम हो,
तीन लोक को युगपत् सहसा,
आप प्रकाशित करते हो ।
अंबुद द्वारा गौरव तेरा,
प्रतिरुद्ध भी नहीं होता,
दिनकर से भी ज्यादा अतिशय,
और नहीं दूजा होता ॥17॥

अर्घ्य - ॐ नमो अजितशत्रु-पराजयं कुरु कुरु पापान्धकार-निवारणाय श्री वृषभजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र - ॐ णमो णमिऊण अट्ठे, मट्ठे, क्षुद्र-विघट्ठे, क्षुद्रपीडां, जठर-पीडां, भंजय भंजय सर्वपीडां सर्वरोग-निवारणं कुरु कुरु स्वाहा।

ऋद्धि - ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठंग-महाणिमित्त-कुसलाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

दीप - ॐ ह्रीं अर्हं फल-पुष्प-पत्र-चारण-ऋद्धि-प्राप्ताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः दीप प्रज्वलनं करोमि।

शत्रु सैन्य स्तंभक

नित्यो - दयं दलित - मोह - महान्ध - कारं,
गम्यं न राहु - वदनस्य न वारि - दानाम् ।
विभ्राजते तव मुखाब्ज - मनल्प - कान्ति,
विद्योतयज् - जग - दपूर्व - शशांक - बिम्बम् ॥18॥

(हिन्दी पद्यानुवाद)

सदा उदित ही रहने वाला,
मोह तिमिर का रिपुवर है,
ना ही प्राप्य राहु-केतु के,
मेघों के भी अपार है।
महा कांतिवाला मुख तेरा
शोभित लगता प्यारा है,
चंद्रबिंब के समान जग को,
लगता उज्ज्वल न्यारा है ॥18॥

अर्घ्य - ऊँ ह्रां ह्रीं क्रौं श्रीं नमो भगवते शत्रु-सैन्य-निवारणाय यं यं यं क्षुर-विध्वंसनाय श्री वृषभजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मंत्र - ऊँ नमो भगवते जय-विजय मोहय मोहय स्तंभय स्तंभय स्वाहा।
ऋद्धि - ऊँ ह्रीं अर्हं णमो विउव्व-इड्ढि-पत्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।
दीप - ऊँ ह्रीं अर्हं अग्निधूम-चारण-ऋद्धि-प्राप्ताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः दीप प्रज्वलनं करोमि।

मन्त्र-तन्त्र प्रभाव नाशक

किं शर्वरीषु शशि - नाह्नि विवस्वता वा,
युष्मन् - मुखेन्दु - दलितेषु तमःसुनाथ !
निष्पन्न - शालि - वन - शालिनि जीव - लोके,
कार्यं कियज्जलधरैर् - जलभार - नम्रैः ॥19॥

(हिन्दी पद्यानुवाद)

दिन में सूरज से क्या करना,
और निशि में निशिकर से ?
पूर्ण अंधेरा नष्ट हो गया,
मुख हिमकर के वंदन से।
जीव लोक में भूमि पर जब,
धान्य पूर्ण पक जाता है,
जल से भरा हुआ तब बादल,
निष्प्रयोज हो जाता है ॥19॥

अर्घ्य **- ॐ ह्रीं रं यं क्षं सकल कालुष्यदोष-निवारणाय श्री वृषभजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

मंत्र **- ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः य क्ष ह्रीं वषट् नमः स्वाहा।**

ऋद्धि **- ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।**

दीप **- ॐ ह्रीं अर्हं मेघ-धारा-चारण-ऋद्धि-प्राप्ताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः दीप प्रज्वलनं करोमि।**

लक्ष्मी, सौभाग्य, संतान प्रदायक

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृताव – काशं,
नैवं तथा हरि – हरादिषु – नायकेषु ।
तेजो महा – मणिषु याति यथा महत्त्वं
नैवं तु काच – शकले किरणा – कुलेऽपि ॥20॥

(हिन्दी पद्यानुवाद)

ज्ञान आपका जैसे मंडित,
पूर्ण रूप से विकसित है,
ऐसे हरिहर, विष्णु, शिव अरु,
देवों में नहीं शोभित है।
जैसे तेज दीप्ति मणियों में,
महिमा अधिकृत होती है,
वैसे सूरज की किरणों से,
काँच भाग न शोभित है ॥20॥

अर्घ्य - ॐ ह्रीं यं शं हं नमो भगवते पुत्रार्थ-सौख्यं कुरु कुरु ह्रीं श्री वृषभजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र - ॐ श्रां श्रीं श्रूं श्रः शत्रुभय निवारणाय ठः ठः नमः स्वाहा।

ऋद्धि - ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

दीप - ॐ ह्रीं अर्हं तंतु-चारण-ऋद्धि-प्राप्ताय
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः दीप प्रज्वलनं करोमि।

सर्व आधीन कारक

मन्ये वरं हरि - हरादय एव दृष्टा,
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोष - मेति ।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः,
कश्चिन् मनो हरति नाथ ! भवान्तरेऽपि ॥21॥

(हिन्दी पद्यानुवाद)

हरि-हरादि देवों को देखा,
उत्तम यही मानता हूँ,
उनके दिख जाने पर मन को,
आप तोष से भरता हूँ।
आप देखने से क्या मिलता,
जिससे पूरी अवनी में,
और कोई न सक्षम जग में,
मेरे मन को हरने में ॥21॥

अर्घ्य **- ऊँ ह्रीं क्षां क्षीं क्षूं क्षः सर्वाधीन-कराय सर्वदोष-हराय श्री वृषभजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**
मंत्र **- ऊँ नमो भगवते सर्वसौभाग्यं सर्वसौख्यं कुरु कुरु स्वाहा।**
ऋद्धि **- ऊँ ह्रीं अर्हं णमो पण्ण-समणाणं-झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।**
दीप **- ऊँ ह्रीं अर्हं ज्योतिश् चारण-ऋद्धि-प्राप्ताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः दीप प्रज्वलनं करोमि।**

भूत-पिशाच भय निवारक

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्,
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता ।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्र - रश्मिं,
प्राच्येव दिग्जनयति स्फुर - दंशु - जालम् ॥22॥

(हिन्दी पद्यानुवाद)

शत-शत माता शत पुत्रों को,
जन्म सदा दे देती हैं,
अन्य कोई भी आप सरीके,
पुत्र नहीं दे सकती है।
सर्व दिशायें तारागण को,
धारण सदा ही करती हैं,
केवल पूर्व दिशा ही इक जो,
धारण रवि को करती है ॥22॥

अर्घ्य - ॐ ह्रीं श्रीं झ्रौं श्रौं भ्रौं द्रौं अनुपम गुणाय श्री वृषभजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र - ॐ नमः श्री वीरेहिं जृम्भय-जृम्भय मोहय-मोहय स्तम्भय-स्तम्भय अवधारणं कुरु कुरु स्वाहा।

ऋद्धि - ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगास-गामीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

दीप - ॐ ह्रीं अर्हं मरुच्-चारण-ऋद्धि-प्राप्ताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः दीप प्रज्वलनं करोमि।

प्रेत बाधा निवारक

त्वा - मा - मनन्ति मुनयः परमं पुमांस,
मादित्य - वर्ण - ममलं तमसः पुरस्तात् ।
त्वा-मेव सम्य - गुपलभ्य जयन्ति मृत्युं,
नान्यः शिवः शिव-पदस्य मुनीन्द्र ! पन्थाः॥23॥

(हिन्दी पद्यानुवाद)

मुनियों द्वारा माने जाते,
आप पुनीत सुमानव हैं,
पावन दिननायक के जैसे,
कृष्णघटा से विहीन हैं ।
उचित रूप से प्राप्त करने को,
शरीरांत भी जीत लिया,
इतर नहीं है शिवसुख साधन,
नाथ आपने बता दिया ॥23॥

अर्घ्य **- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं रं रं रं सर्वसिद्धाय श्रीं नमः श्री वृषभजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

मंत्र **- ॐ नमो भगवती जयावती मम समीहितार्थं मोक्षसौख्यं कुरु कुरु स्वाहा।**

ऋद्धि **- ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसी-विसाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।**

दीप **- ॐ ह्रीं अर्हं अणिमादि-अष्ट-विक्रिया-ऋद्धि-प्राप्ताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः दीप प्रज्वलनं करोमि।**

सीर पीड़ा निवारक

त्वा–मव्ययं विभु–मचिन्त्य–मसंख्य–माद्यं,
ब्रह्माण – मीश्वर – मनन्त – मनंग –केतुम्।
योगीश्वरं विदित – योग – मनेक – मेकं,
ज्ञान–स्वरूप–ममलं प्रवदन्ति सन्तः ॥24॥

(हिन्दी पद्यानुवाद)

अक्षय अचिंत केवल ज्ञानी,
ज्ञान रूप से व्यापक हो,
अंत रहित मंगल गुण वाले,
प्रथम ब्रह्म परमेश्वर हो।
एक अनेक अनंत तुम्हीं हो,
दुर्धर काम विनाशक हो,
कर्म मलों से रहित तुम्हीं हो,
योगीश्वर के ईश्वर हो ॥24॥

अर्घ्य - ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा झ्रौं झ्रौं श्री वृषभजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र - ॐ णमो अरिहंताणं भगवते वड्ढमाण-सामिस्स सर्वसमीहितं कुरु कुरु स्वाहा।

ऋद्धि - ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठि-विसाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

दीप - ॐ ह्रीं अर्हं अप्रतिघात विक्रिया-ऋद्धि-प्राप्ताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः दीप प्रज्वलनं करोमि।

अग्नि ताप शामक

बुद्धस्त्व – मेव विबुधार्चित – बुद्धि – बोधात्,
त्वं शंकरोऽसि भुवन – त्रय – शंकरत्वात् ।
धातासि धीर शिव–मार्ग–विधेर्–विधानात्,
व्यक्तं त्वमेव भगवन् पुरुषोत्तमोऽसि ॥25॥

(हिन्दी पद्यानुवाद)

विद्याधर भी अर्चन करते,
केवल ज्ञानी बुद्ध तुम्हीं,
तीन लोक में सुख के दाता,
शुभ शिव शंकर आप सही ।
मुक्ति मार्ग के विधि विधान से,
तुम ही धीर विधाता हो,
प्रकट रूप से तुम ही ईश्वर
कमलनयन शिवदाता हो ॥25॥

अर्घ्य **- ऊँ ह्रूं अर्हं परम-पदाय ह्रौं नमः श्री वृषभजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।**

मंत्र **-ऊँ ह्रूं ह्रूं नमो भगवते जय-विजया-पराजिते सर्वशान्तिं सर्वसौख्यं कुरु कुरु स्वाहा ।**

ऋद्धि **- ऊँ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।**

दीप **- ऊँ ह्रीं अर्हं अंतर्ध्यान-विक्रिया-ऋद्धि प्राप्ताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः दीप प्रज्वलनं करोमि ।**

सर्वविघ्न विनाशक

तुभ्यं नमस् त्रिभुवनार्ति - हराय नाथ !,
तुभ्यं नमः क्षिति - तलामल - भूषणाय ।
तुभ्यं नमस् - त्रिजगतः परमेश्वराय,
तुभ्यं नमो जिन! भवोदधि-शोषणाय ॥26॥

(हिन्दी पद्यानुवाद)

तीन लोक की बाधा हरते,
नमन आपको करता हूँ,
पृथ्वी के पावन आभूषण !
अभिवादन भी करता हूँ।
त्रय लोकों में परम पिता हो,
वंदन मैं नित करता हूँ,
भव सागर को पार कराते,
वंदन कीर्तन करता हूँ ॥26॥

अर्घ्य - ऊँ ह्रीं श्रीं विं मं यं सर्वदुःख-हराय श्री वृषभजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मंत्र - ऊँ नमो ऊँ ह्रीं श्रीं क्लीं हूँ हूँ परजन-शान्ति-व्यवहारे जयं कुरु कुरु स्वाहा।
ऋद्धि - ऊँ ह्रीं अर्हं णमो दित्त-तवाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।
दीप - ऊँ ह्रीं अर्हं कामरूप-विक्रिया-ऋद्धि-प्राप्ताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः दीप प्रज्वलनं करोमि।

आराधना उपसर्ग निवारक

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणै-रशेषैस्,
त्वं संश्रितो निरवकाश - तया मुनीश ।
दोषै - रुपात्त विविधाश्रय - जात गर्वैः,
स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचि-दपीक्षितोऽसि ।।27।।

(हिन्दी पद्यानुवाद)

परम गुणों से आप भरे हो,
अवसर नहीं रहा कुछ भी,
हे ऋषियो के ईश्वर ! तुम हो,
इसमें विस्मय तनिक नहीं।
अनेक पुरुषों का आशय लें,
अभिमान नहीं अधिकृत हैं,
सपने में भी दोष न देखें,
ना ही विस्मय इसमें है ।।27।।

अर्घ्य - ॐ ह्रीं ढं जं नमो भगवते सर्वार्थसिद्धाय सुखाय ह्रीं श्रीं श्री वृषभजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र - ॐ नमो भगवते सर्वशक्ति संपन्नाय सर्वानुकूलं साधय-साधय शत्रून् स्तंभय स्तंभय नमः स्वाहा।

ऋद्धि - ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्त-तवाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

दीप – ॐ ह्रीं अर्हं उग्र-तपः ऋद्धि-प्राप्ताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः दीप प्रज्वलनं करोमि।

व्यापार लाभ, इष्टकार्य सिद्धिकारक

उच्चै – रशोक – तरु – संश्रित – मुन्मयूख,
माभाति रूप – ममलं भवतो नितान्तम् ।
स्पष्टोल्लसत् किरण – मस्त – तमो–वितानं,
बिम्बं रवेरिव पयोधर – पार्श्ववर्ति ॥28॥

(हिन्दी पद्यानुवाद)

कर्णपूर के तल में शोभित,
रश्मि प्रांश में जाती है,
अनल्प उज्जवल रूप आपका,
छटा सुशोभित होती है।
प्रकट रूप से झिलमिल किरणें,
कृष्णघटा के विघटन को,
जगजीवन के निकट बिंब जो,
सूरज शोभित समान हों ॥28॥

अर्घ्य - ॐ ह्रीं णमो अरहंताणं इष्टकार्य-सिद्धिकराय ह्रीं श्रीं सौं श्री वृषभजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र - ॐ नमो भगवते जय-विजय जृम्भय-जृम्भय मोहय-मोहय सर्वसिद्धि-सौभाग्यं सम्पत्ति-सौख्यं कुरु कुरु स्वाहा।

ऋद्धि - ॐ ह्रीं अर्हं णमो महातवाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

दीप - ॐ ह्रीं अर्हं-दीप्त तपः ऋद्धि-प्राप्ताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः दीप प्रज्वलनं करोमि।

बिच्छू विष निवारक

सिंहासने मणि – मयूख – शिखा – विचित्रे,
विभ्राजते तव वपुः कनका – वदातम् ।
बिम्बं वियद – विलस – दंशु – लता – वितानं,
तुंगो–दयाद्रि–शिर–सीव सहस्र – रश्मेः ।।29।।

(हिन्दी पद्यानुवाद)

मणियों के मयूख से शोभित,
प्रथम भाग सिंहासन का,
मानस को करता है भूषित,
निर्मल हेम वदन प्रभु का।
तारा पथ में शोभा वाले,
झलक स्वरूप लताओं का,
उन्नत शैल शिखर के ऊपर,
सूर्य बिंब देता शोभा ।।29।।

अर्घ्य **- ॐ ह्रीं यौं यौं सर्वविष-निवारकाय श्री वृषभजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**
मंत्र **- ॐ णमो णमिऊण पासं विसहर-फुलिंगमंतो सर्वसिद्धिमीहे समरंताणं मण्णे जागई कप्पदुमच्चं सर्वसिद्धिः ॐ नमः स्वाहा।**
ऋद्धि **- ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरतवाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।**
दीप **- ॐ ह्रीं अर्हं तप्त-तपः ऋद्धि-प्राप्ताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः दीप प्रज्वलनं करोमि।**

शत्रु स्तंभन और सिंहभय निवारक

कुन्दावदात – चल – चामर – चारु – शोभं,
विभ्राजते तव वपुः कलधौत – कान्तम् ।
उद्यच्छशांक – शुचि – निर्झर – वारिधार –
मुच्चैस्तटं–सुर–गिरे–रिव शात–कौम्भम् ॥30॥

(हिन्दी पद्यानुवाद)

श्वेत पुष्प सम पावन चामर,
अनुपम शोभा वाले हैं,
देह आपकी दीप्तिमान है,
कंचन रंगत वाली है।
प्रकट हुये जो निशानाथ सम,
निर्मल जल की धारा युक्त,
हेमकूट के सुवर्णमयी तट,
ऊँचे शोभित हैं संयुक्त ॥30॥

अर्घ्य **- ऊँ ह्रीं ह्रूं द्रीं द्रीं शत्रु-स्तंभनकराय श्री वृषभजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

मंत्र **- ऊँ णमो अट्ठे मट्ठे क्षुद्र विघट्ठे क्षुद्रान् स्तम्भय-स्तम्भय रक्षां कुरु कुरु स्वाहा।**

ऋद्धि **- ऊँ ह्रीं अर्हं णमो घोर-गुणाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।**

दीप **- ऊँ ह्रीं अर्हं महातपः ऋद्धि-प्राप्ताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः दीप प्रज्वलनं करोमि।**

यशः कीर्ति-प्रतिष्ठा प्रदायक

छत्र–त्रयं तव विभाति शशांक – कान्त –
मुच्चैःस्थितं स्थगित – भानुकर – प्रतापम् ।
मुक्ताफल – प्रकर – जाल – विवृद्ध – शोभं,
प्रख्या–पयत्–त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ॥31॥

(हिन्दी पद्यानुवाद)

तीन छत्र की छटा निराली,
शशि सम आभा वाली है,
ऊपर ठहरी रवि की किरणें,
तीव्र ताप को रोकी हैं ।
इंदुरत्न की संचय झालर,
जिनसे शोभा होती है,
तीन लोक की परमेश्वरता,
सहज रूप से प्रकटी है ॥31॥

अर्घ्य - ऊँ ह्रीं क्रौं ह्रीं सर्वयश-प्रदायकाय श्री वृषभजिनाय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मंत्र - ऊँ उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघण मुक्कं;
विसहर विस णिण्णासं मंगल कल्लाण-आवासं ऊँ क्रौं ह्रीं नमः स्वाहा।
ऋद्धि - ऊँ ह्रीं अर्हं णमो घोर-परक्कमाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।
दीप - ऊँ ह्रीं अर्हं घोर तपः ऋद्धि-प्राप्ताय
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः दीप प्रज्वलनं करोमि।

उदर पीड़ा-संहारक

गम्भीर – तार – रव – पूरित – दिग्विभागस्
त्रैलोक्य – लोक – शुभ – संगम – भूति –दक्षः ।
सद् – धर्मराज – जय – घोषण – घोषकः सन्,
खे दुन्दुभिर् – ध्वनति ते यशसः प्रवादी ॥32॥

(हिन्दी पद्यानुवाद)

गहन सौम्य शब्दों से पूरित,
ऐसे भाग दिशाओं को,
शुभ आयोजन कुशल विभूती,
तीन लोक के जीवों को।
तीर्थंकर देवेश घोषणा,
कारक सुंदर भेरिवाद,
आप सुयश को बढ़ा रहे हैं,
शब्द सुमंगल फैले आज ॥32॥

अर्घ्य **- ॐ ह्रीं अर्हं शुं शुं सर्वविध-उदर-पीड़ा-हराय श्री वृषभजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**
मंत्र **- ॐ नमो ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः सर्वदोष-निवारणं कुरु कुरु स्वाहा, सर्वसिद्धि-वृद्धि-वांछा-पूर्णं कुरु कुरु स्वाहा।**
ऋद्धि **- ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर-गुण-बंभयारीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।**
दीप **- ॐ ह्रीं अर्हं घोर-पराक्रमतपः ऋद्धि-प्राप्ताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः दीप प्रज्वलनं करोमि।**

ताप/ज्वर शामक

मन्दार – सुन्दर – नमेरु – सुपारि – जात –
सन्तान –कादि –कुसुमोत्कर –वृष्टि – रुद्धा।
गन्धोद–बिन्दु–शुभ–मन्द–मरुत्–प्रपाता–,
दिव्या दिवः पतति ते वचसां ततिर् वा ॥33॥

(हिन्दी पद्यानुवाद)

मंदर-मंदर दिव्य सुगंधित,
जल कण बिंदु से संयुक्त,
वायु के संग सदा हि गिरती,
उन्नत मुख से जो संयुक्त।
पारिजात प्रभृति कल्पों के,
सुमनों की होती वर्षा,
जैसे आप वचन की सरणि,
अंतरिक्ष होती वर्षा ॥33॥

अर्घ्य - ऊँ ह्रीं क्लीं ह्रीं सर्वविध-ज्वरहराय श्री वृषभजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र - ऊँ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं ध्यानसिद्धि-परम-योगीश्वराय नमो नमः स्वाहा।

ऋद्धि - ऊँ ह्रीं अर्हं णमो आमोसहि-पत्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

दीप - ऊँ ह्रीं अर्हं अघोर-ब्रह्मचारित्वतपः ऋद्धि-प्राप्ताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः दीप प्रज्वलनं करोमि।

गर्भ संरक्षक

शुम्भत् - प्रभा - वलय - भूरि - विभा विभोस्ते,
लोक-त्रये द्युतिमतां द्युति-माक्षिपन्ति ।
प्रोद्यद् - दिवाकर - निरन्तर - भूरि - संख्या,
दीप्त्या जयत्यपि निशामपि सोम-सौम्याम्॥34॥

(हिन्दी पद्यानुवाद)

तीन लोक की सुंदर वस्तु,
निरादार होती जाती,
भामण्डल की आदित्य आभा,
तेजो मंडित है होती।
उदित भानु की अविरल किरणें,
विपुल अंक वाली जो हैं,
अपनी आभा से रजनी को,
सदा जीतने वाली हैं ॥34॥

अर्घ्य **- ॐ ह्रां ह्रीं फं फं सर्वरक्षाकराय श्री वृषभजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**
मंत्र **- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं ह्रौं सर्व रक्षकेभ्यो झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।**
ऋद्धि **- ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेल्लोसहि-पत्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।**
दीप **- ॐ ह्रीं अर्हं मनोबल-ऋद्धि-प्राप्ताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः दीप प्रज्वलनं करोमि।**

प्रकृति प्रकोप नाशक

स्वर्गा – पवर्ग – गम – मार्ग – विमार्गणेष्टः,
सद्धर्म – तत्त्व – कथनैक – पटुस्‌ – त्रिलोक्याः।
दिव्यध्वनिर्‌ – भवति ते विशदार्थ – सर्व –
भाषा–स्वभाव–परिणाम–गुणैः प्रयोज्यः ॥35॥

(हिन्दी पद्यानुवाद)

स्वर्ग मोक्ष जाने के पथ का,
अन्वेषण करने वाली,
सकल लोक में सत्य धरम का,
तत्त्व कथन देने वाली।
कुशल विशद शुभ अर्थों वाली,
भाषा सर्व मयी होती,
स्वभाव से परिणत गुण वाली,
दिव्य ध्वनि तेरी होती ॥35॥

अर्घ्य **- ऊँ ह्रीं श्रीं क्रौं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः हर हर सर्व-कल्याणमूर्ते रक्ष रक्ष श्री वृषभजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**
मंत्र **- ऊँ ह्रीं नमो जय-विजया-पराजित-महालक्ष्मी-अमृतवर्षिणी अमृतस्राविणी अमृतं भव भव वषट्‌ सुधाय स्वाहा।**
ऋद्धि **- ऊँ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहि-पत्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।**
दीप **- ऊँ ह्रीं अर्हं वचनबल-ऋद्धि-प्राप्ताय**
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः दीप प्रज्वलनं करोमि।

सर्वसम्पत्ति-लाभदायक

उन्निद्र – हेम – नव – पंकज – पुंजकान्ति,
पर्युल्लसन-नख-मयूख शिखाभि-रामौ ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र ! धत्तः,
पद्मानि तत्र विबुधाः परि-कल्प-यन्ति ॥36॥

(हिन्दी पद्यानुवाद)

पुष्पित स्वर्णमयी पुष्पों की,
पद अनुपम आभा वाले,
विस्तृत फैली नख किरणों की,
पद सुंदर आभा वाले।
ऐसी दिव्य चरण आभा जब,
जहाँ-जहाँ पर जाती है,
रचना देव कमल की तब-तब,
वहाँ-वहाँ पर होती है ॥36॥

अर्घ्य - ऊँ ह्रां ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रूं सर्वसम्पत्ति दायकाय श्री वृषभजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मंत्र - ऊँ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड-दंड-स्वामिन् आगच्छ-आगच्छ आत्ममंत्रान् आकर्षय-आकर्षय आत्ममंत्रान् रक्ष-रक्ष परमंत्रान् छिन्द-छिन्द मम समीहितं कुरु कुरु स्वाहा।
ऋद्धि - ऊँ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसहि-पत्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।
दीप - ऊँ ह्रीं अर्हं कायबल-ऋद्धि-प्राप्ताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः दीप प्रज्वलनं करोमि।

दुर्जन वशकारक/दुष्ट वचन अवरोधक

इत्थं यथा तव विभूति - रभूज् - जिनेन्द्र !
धर्मोप - देशन - विधौ न तथा परस्य ।
यादृक् - प्रभा दिन - कृतः प्रहतान्ध - कारा,
तादृक् कुतो ग्रह-गणस्य विकासिनोऽपि ॥37॥

(हिन्दी पद्यानुवाद)

वसुविध प्रातिहार्य संपत्ति,
आप जिनेश महान हुई,
धर्म उपदेशन के सुकाल में,
अन्य किसी की नहीं हुई।
जैसी रवि की आभा होती,
कृष्णघटा के विघटन में,
वैसी कैसे हो सकती है,
चमकीले तारागण में ? ॥37॥

अर्घ्य - ऊँ श्रीं ह्रीं क्रौं झ्रौं ब्लूं स्तम्भनगुण विभूषिताय श्री वृषभजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र - ऊँ नमो भगवते अप्रतिचक्रे ऐं क्लीं ब्लूं ऊँ ह्रीं मनोवांछित-सिद्धयै नमो नमः अप्रतिचक्रे ह्रीं ठः ठः स्वाहा।

ऋद्धि - ऊँ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहि-पत्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

दीप - ऊँ ह्रीं अर्हं आमर्ष-औषधि-ऋद्धि-प्राप्ताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः दीप प्रज्वलनं करोमि।

धनलाभ/हाथी वशकारक

श्च्योतन् मदाविल – विलोल – कपोल – मूल–
मत्त –भ्रमद् –भ्रमर –नाद –विवृद्ध –कोपम् ।
ऐरावताभ – मिभ – मुद्धत – मापतन्तं,
दृष्ट्वा भयं भवति नो भव–दाश्रितानाम् ॥३४॥

(हिन्दी पद्यानुवाद)

निर्झर मद से मलिन व चंचल,
गण्डस्थल पर झूम रहे,
परिश्रम करते भौरें गण के,
शब्दों से जो क्रुद्ध हुये।
ऐसे विस्तृत ऐरावत सम,
पाकर हस्ती को सम्मुख,
आप कृपा पात्रों के सम हम,
आश्रित जन को भय न दुःख ॥३४॥

अर्घ्य **- ॐ द्रां द्रीं द्रूं द्रः ठः ठः सर्वशक्ति-विभूषिताय श्री वृषभजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**
मंत्र **- ॐ ह्रीं शत्रुविजय-रण-रणाग्रे ग्रां ग्रीं ग्रूं ग्रः नमो नमः स्वाहा।**
ऋद्धि **- ॐ ह्रीं अर्हं मण-बलीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।**
दीप **- ॐ ह्रीं अर्हं खेल-औषधि-ऋद्धि-प्राप्ताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः दीप प्रज्वलनं करोमि।**

सर्प-सिंह भय निवारक

भिन्नेभ-कुम्भ-गल-दुज्ज्वल-शोणि-ताक्त-
मुक्ताफल - प्रकर - भूषित - भूमिभागः।
बद्ध-क्रमः क्रम - गतं हरिणा - धिपोऽपि,
नाक्रामति क्रम युगाचल-संश्रितं ते ॥39॥

(हिन्दी पद्यानुवाद)

युद्ध समय गज के माथे से,
दीप्त रुधिर जो झरता है,
मुक्ताफल समुदाय विभूषित,
वसुधा खंडित करता है।
पंचानन के पद बंधन में,
पंजों में जो पड़ा हुआ,
प्रभु चरणों में आश्रित पौरुष,
वार ग्रसित वो नहीं हुआ ॥39॥

अर्घ्य - ॐ नमो भगवते भय-विध्वंस-कराय ह्रां ह्रीं क्षौं श्रीं श्री वृषभजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मंत्र - ॐ नमो एषु वृत्तेषु वर्धमान तव भयहरं वृत्तिवर्णा येषु मन्त्राः पुनः स्मर्तव्या अतो ना-पर-मन्त्रं निवेदनाय नमः स्वाहा।
ऋद्धि - ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचि-बलीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।
दीप - ॐ ह्रीं अर्हं जल्ल-औषधि-ऋद्धि-प्राप्ताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः दीप प्रज्वलनं करोमि।

अग्नि-प्रकोप-शामक

कल्पान्त – काल – पवनोद्धत – वह्नि – कल्पं,
दावानलं ज्वलित – मुज्ज्वल – मुत्स्फुलिंगम् ।
विश्वं जिघत्सु – मिव सम्मुख – मापतन्तं
त्वन्नाम–कीर्तन–जलं शमयत्य–शेषम् ॥40॥

(हिन्दी पद्यानुवाद)

प्रलय काल की तेज पवन सम,
तपन तुल्य जो जलती हो,
तुंग ओर में जाने वाली,
उज्ज्वल फुलिंग मय जो हो ।
सारे भव को भस्म करन की,
मानो जिसमें ताकत हो,
नाम आपका जप लेने से,
पूर्ण शमन का अनुभव हो ॥40॥

अर्घ्य **- ॐ सौं ह्रीं क्रौं ग्लौं सुंदरपाय सर्वाग्नितापनिवारणाय श्री वृषभजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।**
मंत्र **- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रां ह्रीं अग्निमुपशमनं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ।**
ऋद्धि **- ॐ ह्रीं अर्हं णमो काय-बलीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।**
दीप **- ॐ ह्रीं अर्हं मल-औषधि-ऋद्धि-प्राप्ताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः दीप प्रज्वलनं करोमि ।**

विष प्रभाव प्रतिरोधक

रक्तेक्षणं समद – कोकिल कण्ठ – नीलं,
क्रोधोद्धतं फणिन – मुत्फण – मापतन्तम्।
आक्रामति क्रमयुगेण निरस्त – शंकस्,
त्वन्नाम–नाग–दमनी–हृदि यस्य पुंसः ॥41॥

(हिन्दी पद्यानुवाद)

मद से युत जो अरुण नेत्र हैं,
कंठ कोकिला सम काले,
क्रोध भयंकर ऊपर फण हैं,
सर्प सामने हैं आते।
द्वि पादों को लाँघ रहे हैं,
संशय जिसमें शेष नहीं,
नाम आपका मन में धारें,
नर समीप संक्लेश नहीं ॥41॥

अर्घ्य **- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ग्लौं नाग-दमनी शक्ति-संपन्नाय श्री वृषभजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**
मंत्र **- ॐ नमो श्रां श्रीं श्रौं श्रः जलदेवि-कमले पद्महद-निवासिनी पद्मोपरि-संस्थिते सिद्धिं देहि मनोवांछितं कुरु कुरु स्वाहा।**
ऋद्धि **- ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीर-सवीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।**
दीप **- ॐ ह्रीं अर्हं-बिड औषधि-ऋद्धि-प्राप्ताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः दीप प्रज्वलनं करोमि।**

युद्ध भय निवारक

वल्गत्तुरंग – गज – गर्जित – भीमनाद –
माजौ बलं बलवता – मपि भूपतीनाम् ।
उद्यद् दिवाकर – मयूख – शिखा – पविद्धं,
त्वत् कीर्तनात्तम इवाशु भिदा–मुपैति ॥42॥

(हिन्दी पद्यानुवाद)

युद्ध भूमि में नाथ आपका,
कीर्तन ही बलवान कहा,
अश्व हस्ति से युत सेना को,
किंचित भी स्थान कहाँ ?
घोर तिमिर को नष्ट कर रहीं,
उदित सूर्य ज्वाला जैसे,
छिन्न कर्म हो जाता क्षण में,
नाम आपका जपने से ॥42॥

अर्घ्य **- ऊँ ह्रीं श्रीं बल-पराक्रमाय संग्राम-मध्ये क्षेमंकराय श्री वृषभजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

मंत्र **- ऊँ णमो णमिऊण विषधर-विष-प्रणाशन-रोग-शोक-दोष-ग्रह कप्पदुम-जाई-सुहणाम-ग्रहण-सकल-सुहृदे ऊँ नमः स्वाहा।**

ऋद्धि **- ऊँ ह्रीं अर्हं णमो सप्पि-सवीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।**

दीप **- ऊँ ह्रीं अर्हं सर्व-औषधि-ऋद्धि-प्राप्ताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः दीप प्रज्वलनं करोमि।**

अस्त्र-शस्त्र प्रभाव हीनकारक

कुन्ताग्र – भिन्न – गज – शोणित – वारि – वाह –
वेगा – वतार – तरणातुर – योध – भीमे ।
युद्धे जयं विजित – दुर्जय – जेय – पक्षास् –
त्वत्पाद – पंकज – वना – श्रयिणो लभन्ते ।।43।।

(हिन्दी पद्यानुवाद)

शस्त्रों से विदीर्ण सर वाले,
हस्ति युक्त रण भूमी में,
रक्त समुद्र युद्ध भूमी में,
योद्धाओं से युद्धों में।
आप चरण द्वय आश्रित मानव,
रहता है भय से निर्भय,
दुर्जय शत्रु-दलों के ऊपर
हो जाती निश्चिंत विजय ।।43।।

अर्घ्य **- ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं धूं धूं सर्वशीतल-कराय श्री वृषभजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**
मंत्र **- ॐ नमो जिनशासन-प्रसारकाय विविधोपद्रव विनाशनाय सर्व-शांतिकराय भगवते नमः इष्ट-सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।**
ऋद्धि **- ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुर-सवीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।**
दीप **- ॐ ह्रीं अर्हं क्षीर-स्रावि-ऋद्धि-प्राप्ताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः दीप प्रज्वलनं करोमि।**

प्रलय/तूफान भय निवारक

अम्भो-निधौ क्षुभित-भीषण-नक्र-चक्र-
पाठीन-पीठ-भय-दोल्वण-वाड-वाग्नौ ।
रंगत्तरंग-शिखर-स्थित-यान-पात्रास्,
त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति ॥44॥

(हिन्दी पद्यानुवाद)

क्षोभ युक्त भयकारी मगरों,
जलचर की टकराहट से,
भय उत्पादक बना समंदर,
युक्त हुआ बड़वानल से।
लहरों की चोटी पर ठहरे,
पोत भगत डगमग करते,
नाथ आपके शुभ चिंतन से,
क्षोभ छोड़ विचरण करते ॥44॥

अर्घ्य **- ऊँ ह्रीं ग्लौं ह्रीं संसार-समुद्र-तारणाय श्री वृषभजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**
मंत्र **- ऊँ नमो सिद्धाय बुद्धाय महाबल-पराक्रमाय मनश्चिंतित कार्यं कुरु कुरु स्वाहा।**
ऋद्धि **- ऊँ ह्रीं अर्हं णमो-अमिय-सवीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।**
दीप **- ऊँ ह्रीं अर्हं मधुर-स्रावि-ऋद्धि-प्राप्ताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः दीप प्रज्वलनं करोमि।**

असाध्य रोग निवारक

उद्भूत – भीषण – जलोदर – भार – भुग्नाः,
शोच्यां दशा–मुप–गताश्–च्युत–जीवि–ताशाः ।
त्वत्पाद – पंकज – रजोऽमृत – दिग्ध – देहा,
मर्त्या भवन्ति मकरध्वज – तुल्य – रूपाः ॥45॥

(हिन्दी पद्यानुवाद)

उठता भीषण रोग उदर में,
भार नहीं अब सहन हुआ,
जीने की छोड़ी आशा फिर,
दु:खद दशा से युक्त हुआ।
चरण आपके सुधाकार हैं,
देह लीन जो करते हैं,
कामदेव सम सुंदर होते,
मोक्ष रमा को वरते हैं ॥45॥

अर्घ्य **- ॐ ह्रीं अर्हं भगवते भय-भीषणहराय श्री वृषभजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

मंत्र **- ॐ नमो भगवती क्षुद्रोपद्रव-शान्तिकारिणी रोग-कष्ट ज्वरोपशमनं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।**

ऋद्धि **- ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीण-महाणसाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।**

दीप **- ॐ ह्रीं अर्हं अमृत-स्रावि-ऋद्धि-प्राप्ताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः दीप प्रज्वलनं करोमि।**

कारागृह बंधन मोचक

आपादकण्ठ – मुरु – श्रृंखल – वेष्टितांगा,
गाढं बृहन् – निगड – कोटि – निघृष्ट – जंघाः।
त्वन्-नाम-मन्त्र-मनिशं मनुजाः स्मरन्तः,
सद्यः स्वयं विगत-बन्ध-भया भवन्ति ॥46॥

(हिन्दी पद्यानुवाद)

पैरों से गर्दन तक बंधन,
विपुल सांकले वेष्टित हैं,
बहु जोर से बंधी बेड़िया,
जंघाओं को दलती हैं।
नाम आपका मंत्र निरंतर,
जो भी मानुष ध्याता है,
स्वतः शीघ्र ही भय बंधन से,
मोक्ष वही पा जाता है ॥46॥

अर्घ्य - ऊँ ह्रीं श्रीं ऐं अर्हं कठिन बंधन-दूरकरणाय श्री वृषभजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र - ऊँ नमो ह्रां ह्रीं श्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ठः ठः ठः जः जः जः क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः क्षयः स्वाहा।

ऋद्धि - ऊँ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

दीप - ऊँ ह्रीं अर्हं सर्पिस्-स्रावि-ऋद्धि-प्राप्ताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः दीप प्रज्वलनं करोमि।

अस्त्र-शस्त्र निष्क्रियकारक

मत्त – द्विपेन्द्र – मृगराज – दवान – लाहि –
संग्राम – वारिधि – महोदर – बन्धनोत्थम् ।
तस्याशु नाश – मुपयाति भयं भियेव,
यस्तावकं स्तव–मिमं मतिमा–नधीते ॥47॥

(हिन्दी पद्यानुवाद)

सिंह जलोदर रोग भयानक,
गजबंधन दावानल से,
भय उत्पन्न अगर होता हो,
युद्ध समुद्र भुजंगम से ।
नाथ आपकी संस्तुति से ही,
डर भी डरकर डर जाता,
बुद्धिमान हो जाता है वो,
संस्तुति को पढ़ता जाता ॥47॥

अर्घ्य - ॐ नमो भगवते उन्मत्त-भयहराय विघ्न-विनाशकाय श्री वृषभजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मंत्र - ॐ नमो ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः सर्वभयहराय श्रीं ह्रीं फट् स्वाहा ।

ऋद्धि - ॐ ह्रीं अर्हं णमो सिद्धायदणाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।

दीप - ॐ ह्रीं अर्हं अक्षीण-महानस-ऋद्धि-प्राप्ताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः दीप प्रज्वलनं करोमि ।

मनोवांछित कार्य सिद्धि

स्तोत्र–स्रजं तव जिनेन्द्र ! गुणैर्–निबद्धां,
भक्त्या मया विविध – वर्ण – विचित्र – पुष्पाम् ।
धत्ते जनो य इह कण्ठ – गता – मजस्रं,
तं ''मानतुंग''– मवशा समुपैति लक्ष्मीः ।।48।।

(हिन्दी पद्यानुवाद)

हे देवों के देव ! जगत में,
भक्ति आपकी करता है,
गुण निबद्ध है मंगलमय है,
विविध पुष्प से रचता है ।
वंदन तेरा जो नर प्रतिदिन,
पूर्ण हृदय से करता है,
मानुतंग सम उभय सुलक्ष्मी,
अनुपम सुख वो पाता है ।।48।।

अर्घ्य **- ऊँ ह्रीं सर्वलक्ष्मी-प्राप्त्यै मनोवांछित-कार्यसिद्धिकराय श्री वृषभजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।**
मंत्र **- ऊँ ह्रीं अर्हं असिआउसा णमो णमो सिद्ध-साहूणं श्रीं श्रीं स्वाहा ।**
ऋद्धि **- ऊँ ह्रीं अर्हं णमो भयवदो महदि-महावीर-वड्ढमाण-बुद्ध-रिसीणो झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।**
दीप **- ऊँ ह्रीं अर्हं अक्षीण-महालय-ऋद्धि-प्राप्ताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः दीप प्रज्वलनं करोमि ।**

संपूर्ण अर्घ्य

(लय : उदक-चंदन-तंदुल...)

वर-सुगन्ध-सतन्दुल-पुष्पकैः,

प्रवर मोदक-दीपक-धूपकैः ।

फल-भरैः परमात्म-प्रदत्तकं,

प्रविजये जयदं धनदं जिनम् ॥

अर्घ्यं : ॐ ह्रीं अर्हं सर्वगुण-सम्पन्नाय शिवपद-प्रदाय श्री वृषभजिनाय भक्तामर-विधाने सम्पूर्ण अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिपुष्पांजलि क्षिपामि।

(यहाँ शेष बचे अक्षत नीचे लिखे श्लोक को पढने के बाद अपने सिर पर डालें)

जय आदि-सुब्रह्मा, त्रिभुवन ब्रह्मा,

ब्रह्म - स्वात्म - स्वरूप - परम्।

जय बोध-सुब्रह्मा, पंच-सुब्रह्मा,

ब्रह्म-सुमित-जलधि-निकरम् ॥

मन्त्र : शुभमस्तु, दीर्घायुरस्तु, सुकीर्तिरस्तु, सद्बुद्धिरस्तु, सर्वसमृद्धिरस्तु आरोग्यमस्तु, विजयोऽस्तु, सर्वकार्य-सिद्धिरस्तु, समाधिरस्तु, तव सिद्ध पति-मानतुंगाचार्य-प्रसादात् केवलीगुणभागी भवतु भवतु स्वाहा !!!

अन्त में यहाँ एक महार्घ्य पढे

मैं देव श्री अरहंत पूजूँ, सिद्ध पूजूँ चाव सों।
आचार्य श्री उवझाय पूजूँ, साधु पूजूँ भाव सों।
अर्हन्त भाषित बैन पूजूँ, द्वादशांग रचे गनी।
पूजूँ दिगंबर गुरुचरण, शिवहेत सब आशा हनी॥
सर्वज्ञ भाषित धर्म दशविधि, दयामय पूजूँ सदा।
जजिभावना षोडश रत्नत्रय,जा बिना शिव नहिं कदा॥
त्रैलोक्य के कृत्रिम, अकृत्रिम, चैत्य चैत्यालय जजूँ।
पनमेरु नंदीश्वर जिनालय, खचर सुर पूजित भजूँ॥
कैलाश श्री सम्मेदगिरि, गिरनार गिरि पूजूँ सदा।
चंपापुरी पावापुरी पुनि, और तीरथ सर्वदा॥
चौबीस श्री जिनराज पूजूँ, बीस क्षेत्र विदेह के।
नामावली इक सहस वसु जय होय पति शिवगेह के॥

(दोहा)

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय।
सर्व पूज्य पद पूज हूँ, बहु विधि भक्ति बढ़ाय॥
अर्घ्यं : ॐ ह्रीं अर्हं सकल कर्म-क्षयार्थं सम्पूर्ण
महाअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति-पाठ

(चौपाई)

शान्तिनाथ मुख शशि उनहारी, शील गुणव्रत संयमधारी।
लखन एक सौ आठ विराजैं, निरखत नयन कमलदल लाजैं॥
पञ्चम चक्रवर्ति पदधारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी।
इंद्र नरेन्द्र पूज्य जिन नायक,नमो शांतिहित शांति विधायक॥
दिव्य विटप पहुपन की वरषा, दुन्दुभि आसन वाणी सरसा।
छत्र चमर भामंडल भारी, ये तुव प्रातिहार्य मनहारी॥
शान्ति जिनेश शांति सुखदाई, जगत्पूज्य पूजौं शिरनाई।
परम शांति दीजै हम सबको , पढ़ैं जिन्हें पुनि चार संघको॥

(वसंततिलका)

पूजैं जिन्हें मुकुटहार किरीट लाके, इन्द्रादि देव अरु पूज्य पदाब्ज जाके॥
सो शांतिनाथ वर वंश जगत्प्रदीप, मेरे लिए करहिं शांति सदा अनूप॥

(इन्द्रवज्रा)

संपूजकों को, प्रतिपालकों को, यतीनकों को, यतिनायकों को।
राजा प्रजा राष्ट्र सुदेश को ले, कीजे सुखी हे जिन! शान्ति को दे॥

(स्रग्धरा)

होवै सारी प्रजा को सुख, बलयुत हो धर्म-धारी नरेशा।
होवै वर्षा समै पै, तिलभर न रहे व्याधियों का अंदेशा॥
होवै चोरी न मारी, सुसमय वरतै, हो न दुष्काल भारी।
सारे ही देश धारैं जिनवर-वृषको जो सदा सौख्यकारी॥

(दोहा)

घातिकर्म जिन नाश करि, पायो केवलराज।
शान्ति करो सब जगत में, वृषभादिक जिनराज॥

(मन्दाक्रान्ता)

शास्त्रों का हो पठन सुखदा लाभ सत्संगती का,
सद्वृतों का सुजस कहके, दोष ढाकूँ सभी का।
बोलूँ प्यारे वचन हित के आपका रूप ध्याऊँ,
तौ लों सेऊ चरण 'जिन'के मोक्ष जौ लों न पाऊँ।।

(आर्या)

तव पद मेरे हिय में, मम हिय तेरे पुनीत चरणों में।
तब लौं लीन रहौं प्रभु, जब लौं पाया न मुक्ति पद मैंनें।।
अक्षर पद मात्रा से,दूषित जो कुछ कहा गया हो मुझसे।
क्षमा करो प्रभु सो सब, करुणा करि पुनि छुड़ा हु भव दुख से।।
हे जगबंधु जिनेश्वर, पाऊँ तव चरण शरण बलिहारी।
मरण समाधि सु दुर्लभ, कर्मों का क्षय सुबोध सुखकारी।।

(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

(कायोत्सर्ग पूर्वक नौ बार णमोकार मंत्र का जाप करें)

विसर्जन

बिन जाने वा जानके, रही टूट जो कोय।
तुम प्रसाद तैं परम गुरु, सो सब पूरन होय।।1।।
पूजन विधि जानूँ नहीं, नहिं जानूँ आह्वान।
और विसर्जन हूँ नहीं क्षमा करहु भगवान।।2।।
मन्त्रहीन धनहीन हूँ, क्रियाहीन जिनदेव।
क्षमा करहु राखहु मुझे, देहु चरण की सेव।।3।।
तुम चरणन ढिंग आयके, मैं पूजूँ अतिचाव ।
आवागमन रहित करो, रमूँ सदा निज भाव।।4।।
आये जो जो देवगण, पूजे भक्ति प्रमान ।
ते अब जावहू कृपाकर, अपने अपने थान।।5।।
श्री जिनवर की आशीका, लीजे शीश चढाय ।
भव-भव के पातक कटें, दुःख दूर हो जाय।।6।।

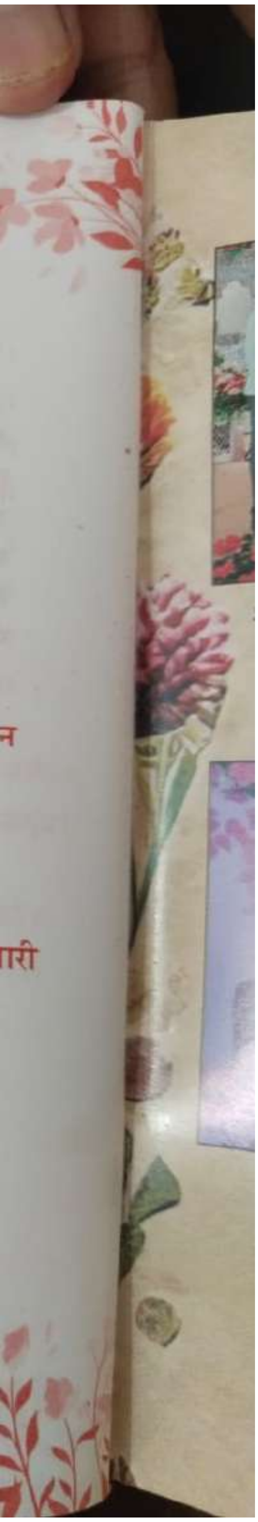

"भक्तामर व्रत विधि"

व्रतारम्भ तिथि -	किसी भी माह की अष्टमी अथवा चतुर्दशी
व्रत अवधि -	1 वर्ष अथवा शक्ति अनुसार
व्रत विधि -	व्रत के दिन उपवास अथवा शक्ति अनुसार रसत्याग / एकासन
व्रत जाप मंत्र -	ऊँ ह्रीं क्लीं ऐं श्रीं अर्हं श्री वृषभनाथ - तीर्थंकराय नमः
उद्यापन विधान -	भक्तामर विधान
व्रत फल -	संकट, प्राकृतिक, प्रकोप, महामारी असाध्य रोगदि निवारक